अभ्यास

१. प्रस्तुत पंक्तियों को अपने शब्दों में कहानी के संदर्भ में व्याखया करें ।

लकड़ी चीरने का उसे अभ्यास न था । घास उसके खुरपे के सामने सिर झुका देती थी । यहाँ कस-कसकर कुल्हाड़ी का भरपूर हाथ लगाता पर उस गाँठ पर निशाना तक न पड़ता था । कुल्हाड़ी उचट जाती । पसीने में तर था । हाँफता था । थककर बैठ जाता था फिर उठता था । हाथ उठाये न उठते थे, पाँव काँप रहे थे । कमर सीधी न होती थी आँखों तले अंधेरा हो रहा था, सिर में चक्कर आ रहे थे, तितलियाँ उड़ रहीं थीं फिर भी अपना काम किये जाता था । अगर एक चिलम तम्बाकू पीने को मिल जाती तो शायद कुछ ताकत आती । उसने सोचा, यहाँ चिलम और तम्बाकू कहाँ मिलेगी । ब्राह्मणों का पूरा है । ब्राह्मण लोग हम नीच जातों की तरह तमाखू थोड़े ही पीते हैं । सहसा उसे याद आया कि गाँव में एक गोंड भी रहता है । उसके यहाँ जरूर चिलम तम्बाकू होगी । तुरन्त उसके घर दौड़ा । खैर मेहनत सफल हुई । उसने तमाखू भी दी और चिलम भी दी, पर आग वहाँ न थी ।

२. पंडित और पंडिताइन में दुखी को आग देने के लिये क्या बहस हुई ?